दिनांक :- 29-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ०-फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड इतिहास
विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास
एकाई :- ~~चतुर्थ~~ पांच
पत्र :- एक
अध्याय :- उत्तर वैदिक काल स्त्रोत

उत्तर वैदिक काल के अध्ययन के लिये साहित्यिक तथा पुरातात्विक दोनों प्रकार के स्त्रोत उपलब्ध हैं।

पुरातात्विक स्त्रोत :-

उत्तर वैदिक काल के अध्ययन के लिये चित्रित धूसर मृदभांड लोहे के उपकरण महत्वपूर्ण साक्ष्य हैं। अब आर्यों के स्थायी निवास का विकास हुआ। इस कारण यह भी महत्वपूर्ण साक्ष्य हैं।

अब तक चित्रित धूसर मृदभांड (पी०जी० डब्ल्यू) से जुड़े

हुए लगभग 750 स्थल प्रकाश में आए हैं। इनमें लगभग 30 की खुदाई हुई है।

अभी तक उत्खनन में लौह उपकरणों की सर्वाधिक संख्या अतरंजीखेड़ा से प्राप्त हुई है। पहले पहल अतरंजीखेड़ा से ही लौह उपकरणों की प्राप्ति हुई है। वैदिक काल के अंतिम दौर में लौहे का ज्ञान पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं बिहार तक फैल गया। उत्तर वैदिक ग्रंथ यजुर्वेद में इन धातु उपकरणों को श्याम अयस अथवा कृष्ण अयस कहा गया है।

साहित्यिक स्त्रोत :-
उस काल के अध्ययन के महत्वपूर्ण साहित्यिक स्त्रोत हैं— सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, अरण्यक एवं उपनिषद

राजनीतिक विस्तार

वैदिक सभ्यता का प्रसार जितना उत्साही राजकुमारों के प्रयास से हुआ उतना ही पुरोहितों द्वारा अग्नि को नए प्रदेश का स्वाद चखाने के लिये हुआ। 1000 ईसा पूर्व में जब लौहे के उपकरण बनने लगे तो गंगा-यमुना के दोआब

क्षेत्र को साफ करना अधिक सुगम हो गया। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में आर्यों का सामना उन लोगों से हुआ जो ताँबे के औजार एवं गेरुए रंग के मृदभांड का करते थे। पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं उत्तरी बिहार में उन का सामना ऐसे लोगों से हुआ जो ताँबे के औजार व काले एवं लाल रंग के मृदभांडों का प्रयोग करते थे। यह कहना मुश्किल है कि उनका सामना उत्तर हड़प्पा लोगों से हुआ था मिश्रित नस्ल के लोगों से। विस्तार के दूसरे दौर में वे इसलिए सफल हुए कि उनके पास लोहे के हथियार एवं अश्वचालित रथ थे।

उत्तर वैदिक काल में आर्य पंजाब से निकलकर गंगा-यमुना दोआब के अंतर्गत संपूर्ण उत्तर प्रदेश में फैल गये। शतपथ ब्राह्मण में उल्लिखित विदेहमाधव की कहानी से पता चलता है कि आर्यों का सदानीरा

या गण्डक नदी तक प्रसार हो चुका था। दक्षिण में आर्य विदर्भ तक बढ़ चले थे।

अब तक वैदिककालीन अनेक छोटे कबीले एक-दूसरे में विलीन होकर बड़े क्षेत्रगत जानपदों को जन्म दे रहे थे. जैसे दो प्रमुख कबीले भरत एवं पुरु एक होकर कुरु के नाम से जाना जाने लगे। आरंभ में ये लोग दोआब के ठीक छोर पर सरस्वती एवं दृषद्वति नदियों के प्रदेश में बसे और प्रारंभ में उनकी राजधानी आसन्दीवत थी। शीघ्र ही कुरुओं ने दिल्ली एवं ऊपरी दोआब पर अधिकार कर लिया और यही क्षेत्र कुरु क्षेत्र कहलाने लगा तथा उनकी राजधानी हस्तिनापुर हो गई। बाह्लिक प्रतिपीय, राजा परीक्षित, जन्मेजय आदि इसी राज वंश के प्रमुख राजा हुए। परीक्षित का नाम अथर्ववेद में भी मिलता है। जन्मेजय के बारे में ऐसा माना जाता

है कि उसने दो सर्पसत्र तथा दो अश्वमेध यज्ञ किये। कुरू वंश का अंतिम शासक निचक्षु था। वह अपनी राजधानी हस्तिनापुर से कौशांबी ले गया। क्योंकि हस्तिनापुर एक बाढ़ में नष्ट हो चुका था।

कुरू काल के इतिहास से ही महाभारत का युद्ध भी जुड़ा है। माना जाता है कि यह युद्ध भी 950 ई० पूर्व में कौरवो तथा पांडवो के मध्य हुआ था हालांकि दोनों कुरू कुल के ही थे।

छान्दोग्य। उपनिषद के अनुसार कुरू क्षेत्र में कभी ओले नही पड़े तथा न ही टिड्डीयों के आतंक के कारण अकाल ही पड़ा।

पंचाल :- मध्य दोआब में क्रीवी तथा तुर्वश आर्य शाखाओ ने मिलकर पांचाल राजवंश की स्थापना की। इसका क्षेत्र आधुनिक बरेली, बदांयू एवं फर्रुखाबाद था। पांचालो की राजधानी काम्पिल्य थी

पांचाल एवं कुरू को शतपथ ब्राह्मण में वैदिक सभ्यता का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि कहा गया है।

पांचालों के महत्वपूर्ण शासक प्रवाहन जैवलि थे, जो विद्वानों के संरक्षक थे। पांचाल दार्शनिक राजाओं के लिये भी जाना जाता है। आरुणि श्वेतकेतु इसी क्षेत्र से जुड़े शासक थे।

उत्तर वैदिककालीन सभ्यता का केन्द्र मध्यप्रदेश था। यह सरस्वती नदी से गंगा के दोआब तक फैला हुआ था। गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र से आर्यों का विस्तार सरयू नदी तक हुआ और सरयू नदी के किनारे हुआ तथा काशी राज्य स्थापना हुई, जो रामकथा से जुड़ी है। फिर आर्यों का विस्तार वरणवति नदी के किनारे हुआ तथा काशी की स्थापना हुई। इसकी राजधानी बनारस थी। बनारस से संबद्ध अजात शत्रु को एक दार्शनिक राजा माना जाता है।

उपनिषद काल में सदानीरा (गंडक) के किनारे विदेह राज्य

की स्थापना हुई। विदेह की राजधानी मिथिला थी।
इसके महत्वपूर्ण शासक राजा जनक थे। शतपथ
ब्राह्मण से सूचना मिलती है कि विदेह माधव ने अपने
गुरु राहुल गण की सहायता से अग्नि द्वारा इस क्षेत्र
को साफ किया था।
सिंधु नदी के दोनों तटों पर गांधार जनपद था। गांधार तथ
व्यास नदी के मध्य कैकेय का देश अवस्थित था। इस
वंश का दार्शनिक राजा अश्वपति कैकेय था।
छांदोग्य उपनिषद में उसके द्वारा दावा किया गया है
कि मेरे राज्य में न चोर है न मद्यप है और न ही क्रिय
हीन व्यभिचारी तथा अविद्वान है।
मध्य पंजाब में स्यालकोट तथा उसके आस-पास
मद्र देश था। राजस्थान के जयपुर, अलवर और भरत
पुर के मध्य मत्स्य देश की राजधानी हुई।
मध्य क्षेत्र में कुशीनगर की स्थापना हुई।

Scanned with CamScanner